जुलाई-दिसम्बर, 2025 (संयुक्त अंक बारह व तेरह) ISSN No. : 3050-4899

साहित्य का विश्वरंग

(हालैंड से 'साझा संसार फाउंडेशन' द्वारा प्रकाशित विश्व साहित्य की समावेशी पत्रिका)

भारतीय भाषाओं की एकात्मकता विशेषांक

साहित्य का विश्वरंग

ISSN: 3050-4899

जुलाई - दिसम्बर, 2025 (संयुक्त अंक बारह व तेरह)

मार्गदर्शक

संतोष चौबे

सलाहकार संपादक

लीलाधर मंडलोई

संपादक

रामा तक्षक

सहायक संपादक

विनीता तिवारी

शिवांगी शुक्ला

प्रबंध संपादक

भारत- अरविंद चतुर्वेदी

नीदरलैंड- रामा तक्षक

सलाहकार मंडल, भारत

यादवेन्द्र, मनोहर बाथम, उपेंद्र कुमार

प्रियंकर पालीवाल

यूरोप

रामा तक्षक

पुष्पिता अवस्थी (नीदरलैंड्स)

पूजा अनिल (स्पेन)

दिव्या माथुर (यू के)

तेजेन्द्र शर्मा (यू के)

कपिल शर्मा (बेल्जियम)

डॉ. शिप्रा शिल्पी (सक्सेना)

कला : सहयोगी संपादक

राजेंद्र शर्मा

शशिभूषण बडौनी

विश्वास दुबे

तकनीकी संपादक

सुचिंत मंडलोई

आशीष कपूर

मनीष पांडेय

सहयोग

शैलजा सक्सेना (कनाडा)

शशि पाधा (अमेरिका)

प्रगति टिपणीस (रूस)

शिखा रस्तोगी (थाईलैंड)

मोनी कोईराला (दोहा)

सविता जाखड़ (डेनमार्क)

डॉ. आरती लोकेश गोयल (दुबई)

आराधना श्रीवास्तव (सिंगापुर)

शिव मोहन सिंह (किर्गिज़स्तान)

प्रकाशक

Sajha Sansar Publishing House

Watertuin 24

3648GC, Wilnis, The Netherlands

ईमेल- sahityakavishwarang@gmail.com

मुद्रक

विकास कम्प्यूटर एंड प्रिंटर्स

ट्रोनिका सिटी, लोनी, ग़ाज़ियाबाद-201102

मूल्य ₹ 250/- (डाक खर्च अतिरिक्त)

अनुक्रम

सम्पादकीय : विविधताओं की एकतात्मकता का मूल मंत्र क्या है?	रामा तक्षक (नीदरलैंड्स)	3
भारतीय भाषाओं में एकात्मकता	पद्मश्री डा. तोमिओ मिज़ोकामि	7
भारतीय भाषाओं का संरक्षण-संवर्द्धन	अतुल कोठारी	11
हिन्दी – मराठी अंतर्संबंध	डॉ. दामोदर खड़से	16
हिंदी व ब्रज की मातृभाषायी एकातात्मकता	डॉ हरिसिंह पाल	20
हिन्दी के विस्तार पर समाज भाषिकी दृष्टि	डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल	28
हिंदी और कश्मीरी : अन्त:संबंधों/एकात्मकता की व्याख्या	डा० शिबन कृष्ण रैणा	33
हिन्दी व संस्कृत व मातृभाषाई एकात्मकता	डॉ. शोभा ओम प्रजापति	40
हिन्दी और भोजपुरी की मातृभाषाई एकात्मकता	डॉ.श्वेता दीप्ति	43
हिंदी और ब्रज का दर्शन : एक उज़्बेकी दृष्टि	उल्फत मुखीबोवा (उज़्बेकिस्तान)	47
हिंदी व राजस्थानी के साथ अन्य क्षेत्रीय मातृभाषाई एकात्मकता	कौसर भुट्टो	52
हिंदी तेरे रूप : कुछ तथ्य	तत्याना ओरांस्कया (जर्मनी)	57
हिंदी, बुंदेलखंडी और अन्य मातृभाषाओं की एकात्मकता	निधि खरे (नीदरलैंड्स)	59
भारत भाषा विमर्श	श्रद्धा रामा-मतई (नीदरलैंड्स)	62
द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी - शिक्षण और मातृभाषाओं (गुजराती) की भूमिका	प्रो. दीपेंद्र सिंह जाडेजा	65
हिंदी : बंगाली व अन्य क्षेत्रीय मातृभाषाएँ	श्रीपर्णा तरफदार	69
हिन्दी व छत्तीसगढ़ी मातृभाषाई एकात्मकता	मीनकेतन प्रधान	72
कन्नड़ और हिन्दी में साहित्य और भाषाई समानता	डॉ. एस. ए. मंजुनाथ	79
डोगरी और हिन्दी की भाषाई समानता -असमानता	शशि पाधा (वर्जीनिया)	83
हिन्दी और तेलुगु के बीच एकात्मकता	डॉ. अइनापुरपु रामलिंगेश्वर राव	86
हिंदी एवम मालवी भाषाई एकात्मकता	मनोहर सिंह चौहान मधुकर	90
बिहारी हिंदी: बज्जिका का अन्य बिहारी भाषाओं के साथ एकात्मकता	रजनी प्रभा	94
'हिंदी व नेपाली मातृभाषाई एकात्मकता'	विद्यावाचसपती' अजय कुमार झा (नेपाल)	101
हिंदी और तमिल भाषा में एकात्मकता	एस भाग्यम शर्मा	106
हिंदी भाषा की एकात्मकता – तमिल के संदर्भ में	डॉ. एन. लावण्या	112
हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में एकात्मकता -मलयालम के संदर्भ में	डॉ. के. वत्सला	115
अवधी, हिंदी भाषा की आत्मा में बसती है	डॉ॰ राकेश पांडेय	118
हिंदी एवं गुजराती की मातृभाषायी एकात्मकता	डॉ.राम गोपाल सिंह	123
हिंदी जीवन है तो गढ़वाली मन-प्राण	सरोजिनी नौटियाल	128
हिन्दी और पंजाबी के पारस्परिक संबंध	डॉ विनोद कुमार	132
उर्दू-हिंदी एक ज़बान, जिससे महके सारा जहान...	बद्र वास्ती	136
हिंदी और बांग्ला साहित्य का अंतर्संबंध	सोमा बंद्योपाध्याय	140
हिंदी और सिंधी जुड़वा बहनें	बरखा ख़ुशहालानी (मुंबई)	145
प्रौद्योगिकी टूल्स द्वारा हिंदी भाषा शिक्षण व यात्रा साहित्य	सागर देसले	147
हिंदी की आत्मा में प्राकृत	डॉ. ममता जैन, पुणे	152

हिंदी और ब्रज का दर्शन : एक उज़्बेकी दृष्टि

उल्फत मुखीबोवा
(उज़्बेकिस्तान)

डॉक्टर ऑफ साईनस, प्रोफेसर, ताशकंद राजकीय प्राच्य विद्या विश्वविद्यालय, उज़्बेकिस्तान

ई-मेल: ulfatmuhibs@mail.ru

मोबाइल नंबर: +998 94 644 30 37

उज़्बेकिस्तान में हिंदी भाषा और साहित्य पिचहेत्तर साल से यानि सन् 1947 से पढ़ाया जाता है। इसका मतलब हमारी हिंदी की पढ़ाई भारत की स्वतंत्रता के बराबर है। मुझे मध्यकालीन भारत के सब से महत्वपूर्ण साहित्य - भक्ति साहित्य पर अपना सोच-विचार प्रकट करना मेरे लिये बड़े हर्ष की बात है।

भक्ति साहित्य पर मेरी रुचि तब शुरु हुई जब मुझे मेरे गुरु प्रो. आज़ाद शामातोव जी ने पी.एच. डी के लिये ब्रज भाषा में लिखी गयी "सूरदास की वार्ता" नाम की एक पुस्तक दी और उसकी भाषा और शैली का अध्ययन करके पी.एच. डी का शोध-कार्य लिखने को कहा था। उस समय के नियमानुसार पी.एच. डी के लिये अध्यक्ष मास्को से लेना पड़ता था। मास्को विश्वविद्यालय के प्रो. नाताल्य साज़ानोवा को मेरे शोध कार्य के अध्यक्ष के रूप में लिया गया। मैं उनसे मिलने मास्को गयी। मेरे साथ पी.एच. डी के विषय पर बात करते समय, साज़ानोवा ने कहा कि मुझे "सूरदास की वार्ता" नहीं "चौरासी वैष्णवन की वार्ता" को लेकर उसे ब्रज भाषा का पहला गद्य के रुप में अध्ययन करके शोध-कार्य लिखना उचित होगा। प्रो. साज़ानोवा की यह एक बात हमेशा के लिये मेरी याद में रह गयी। उन्होंने कहा था कि पी.एच.डी के लिये ऐसा विषय चुनना चाहिये जो तुम्हें ज़िंदगी भर के लिये विषय बन जाए। इस तरह मेरे दो गुरुओं ने मिलकर मुझे भक्ति साहित्य के अध्ययन का रास्ता दिखाया। स्वयं साज़ानोवा ने भी भक्ति साहित्य पर, मुख्य सूरदास पर जीवन भर काम किया और काफ़ी अच्छी किताबें लिखीं।

मैंने अपने गुरुओं की बात मानकर, पी.एच.डी के लिये उसी वार्ता पद्धति को और इसकी 17वीं सदी की पहली स्मारक "चौरासी वैष्णवन की वार्ता" को चुना जो गोकुलनाथ जी द्वारा लिखी गयी थी।

शुरु में मुझे इस पुस्तक को समझना बड़ा कठिन हुआ। आधी बात समझती और आधी बात नहीं। प्रो. शामातोव ने मुझे पी.एच.डी पर काम करने के लिये सन् 1990 को दस महीने के लिये भारत भेजा था। साज़ानोवा ने कहा कि भक्ति साहित्य को समझने के लिये ब्रज भूमि जाना चाहिये। जहां उसका उद्भव और विकास हुआ। ब्रज का यह क्षेत्र आगरा विश्वविद्यालय था। इस तरह मैंने पांच महीने तक आगरा के डा. भीमराव अम्बेदकर विश्वविद्यालय में अपने पी.एच. डी का काम जारी रखा। विशेष तौर पर "चौरासी वैष्णवन की वार्ता" को समझने और इसका अनुवाद करने में लगी गयी। आगरा विश्वविद्यालय में मैंने भक्ति साहित्य पर बहुत सारी पुस्तकें, शोध कार्यों का अध्ययन किया, जिन में से प्रभूदयाल मित्तल की अष्टछाप परिचय, पुरुषोत्तम अग्रवाल की 'अकथ कहानी प्रेम की', हज़ारीप्रसाद द्वीवेदी की 'कबीर', मीरा कांत की 'मीराबाई मुक्ति की साधिका' और 'दादु ग्रन्थावली', शिवकुमार मिश्र की 'भक्ति आंदोलन और भक्ति साहित्य', मलिक मुहम्मद की 'वैष्णव भक्ति आंदोलन', रघुवंश की 'कबीर एक नयी दृष्टि', वसंतयमदामिल की छीतस्वामी', योगेंद्र सिंह की 'संत रैदास',बलदेव वंशी की 'मलूकदास', रामबक्ष की 'दादू दयाल', हरगुलाल की 'गोविन्दस्वामी' और 'कृष्णदास' जैसी पुस्तकों के नाम ले सकती

हूं। ये सारी पुस्तकें पढ़कर मैंने अपना शोध कार्य लिखा था।

प्रो. न. साज़ानोवा भी ब्रज भाषा में लिखे भक्ति साहित्य के अध्ययन के लिये हमेशा आगरा जाते थे। इसलिये वहाँ पर, उनके जान पहचान के लोग बहुत थे। मैं भारत जाने से पहले मास्को में उनसे मिलने गयी। तब उन्होंने मुझ से कहा कि "चौरासी वैष्णवन की वार्ता" को समझने में कोई भी कठिनाई आयी तो मेरी सहेली शांता बहन से मिलना। शांता बहन एक कृष्णभक्त औरत थीं और प्रो. साज़ानोवा ने भी भक्ति साहित्य को, सूरदास की कविताओं को समझने में उनसे हमेशा मदद ली थी। उनके बीच लगभग तीस साल की दोस्ती थीं। उनके कहने पर मैं आगरा में सब से पहले शांता बहन से मिलने गयी। यह सन् 1991 के जनवरी की बात है। साज़ानोवा का नाम सुनते ही वह बड़ी गर्मजोशी से मुझ से मिली और बहुत जल्दी मुझे अपना लिया। फिर उनके मार्गदर्शन पर मैंने भक्ति साहित्य का, भक्तों का, "चौरासी वैष्णवन की वार्ता" का अध्ययन शुरु कर दिया।

शांता बहन का वैष्णव भक्तों के साथ बड़ी दोस्ती थी। आगरा में पुष्टिमार्गीय लोगों का एक संगठन था। वे हमेशा आपस में मिलकर, कृष्णलीलाओं पर बात करते, तरह तरह के उत्सव मनाते थे। मेरा आगरा आना होली मनाने के समय हुआ था। वैष्णव लोगो में होली को महीने भर मनाने की परम्परा थी। फरवरी को वैष्णव लोगों ने होली मनाना शुरू कर दिया। परंपरा के अनुसार सारे वैष्णव लोग, प्रतिदिन किसी न किसी वैष्णव के घर में इकट्ठा होकर होली मनाते थे। और शांता बहन हर बार मुझे भी उनके यहां ले जाती थी। पहली बार जब मैं वैष्णव लोगों के पास आयी तो शांता बहन ने उनको मेरा परिचय देकर, मेरे शोध कार्य के बारे में भी बताया। यह बात सुनकर सभी वैष्णव लोग बहुत खुश हुए और कहा कि तुम बिलकुल सही जगह पर आ पहुंची हो।

वैष्णव लोग होली को महाभारत की घटनाओं के आधार पर मनाते थे। उसमें राधा कृष्ण के होली मनाने से संबंध तरह-तरह की घटनांओं को याद करके, उन पर अष्टछाप के कृष्णभक्त कवियों की तरफ से लिखी गई गीतों को नृत्य के साथ गाकर मनाते थे। इस तरह मैं भक्ति साहित्य को समझने के साथ साथ महाभारत को भी गहराई से समझने लगी। महाभारत का भक्ति साहित्य से संबंध, भारतीय लोगों के जीवन में, महाभारत के महत्त्व को समझने लगी। भक्ति साहित्य पर, अपने देश में लिया गया मेरा ज्ञान आग की चिंगारियों की तरह था। अब मैं अच्छी तरह समझने लगी थी कि भक्ति साहित्य जैसी चिंगारी महाभारत जैसे आग से उड़ कर निकली थी। साथ साथ "चौरासी वैष्णवन की वार्ता" में जिन भक्त लोगों के बारे में गोकुलनाथ जी ने लिखा था वे पुष्टि संप्रदाय के वैष्णव लोग थे, जो भक्ति के प्रचारक श्री वल्लभाचार्य जी के शिष्य थे और भक्ति के अन्य संप्रदायों के लोगों से बिलकुल अलग विचारधारा, निराले से भक्ति भाव के लोग थे।

इस तरह मैं शांता बहिन की मदद से वैष्णव लोगों से मिलती रही। उनके साथ हर मुलाकात में मुझे भक्ति के मूल आधार पर, जानकारियां मिलती रहीं। मैंने एक बड़ी डायरी लेकर, हर नई बात को उसमें लिखती रही। "चौरासी वैष्णवन की वार्ता" को पढ़ते समय मेरे लिए जो नये शब्द या वाक्य मिलने पर उनको वैष्णव लोगों की मदद से समझती गई और डायरी में लिखती गई।

इस तरह मैं आगरा में, भक्ति साहित्य के चौरासी वार्ता को गहराई से अध्ययन करने में व्यस्त रही। दिन ब दिन मुझे नई बातें, नई जानकारियां मिलने से बहुत खुश रहती थी। वैष्णव लोग भी मेरी रुचि देखकर, अपने हर एक बैठक के लिए मुझे बुलाते थे। वैष्णव लोगों के साथ मुझे ब्रजभूमि के भक्ति से संबंध, महाभारत और कृष्णलीला से संबंध मुख्य क्षेत्र - मथुरा, वृंदावन, गोकुल, बरसाना, कामा जैसे क्षेत्रों का भ्रमण करने का, कृष्ण भक्तों के मुख्य मंदिरों को भी दर्शन करने का, उनका भारतीय लोगों के जीवन में महत्व को समझने के लिये बहुत ही अच्छा मौक़ा मिला था। इसके बाद मुझे भक्ति साहित्य को, विशेष रुप से "चौरासी वैष्णवन की वार्ता" को समझना आसान हुआ। "चौरासी वैष्णवन की वार्ता" को पढ़ने, अनुवाद करने में भक्ति के मूल आधार को समझने में मदद देने वाले तरह तरह के धार्मिक और दार्शनिक अर्थों के शब्द, विभिन्न घटनाओं के वर्णन थे। जिनको समझे बिना शोधकार्य लिखना मुमकिन न था। उदाहरण के लिए, महाभारत की घटनाओं में राधा कृष्ण के सखी-सखाओं के साथ होली मनाना, वैष्णव लोगों के लिए होली मनाने की परंपरा बन चुकी थी। विशेष तौर पर, दाऊजी का होरंगा वैष्णव लोग अभी तक उसी तरह मनाते हैं जैसा महाभारत में कृष्ण के भाई दाऊजी ने मनाया था। भक्ति साहित्य के अध्ययन में, "चौरासी वैष्णवन की वार्ता" में हिन्दु धर्म से संबंधित जो शब्द मुझे मिले, वे मेरे लिये भक्ति को समझने का आधार बन गये। उदाहरण के लिये – रातलीला, दिनलीला, श्रंगारलीला, बाललीला, चौरासी लाख योनि, कर्म, योग, परलोक, पुष्टि, दो सौ बावन, अद्वैत, द्वैत, कंहैया, गोपी, विलीन होना, मक्खनचोर, ग्वाल, अष्टछाप, अष्टसखी, अष्टसेवा, मंगला, श्रंगार, राजभोग,

उट्ठापन, संध्या आरती, प्रहार, कीर्तन सेवा आदि। ये सारे शब्द, मुझे हिन्दुओं को, भक्ति साहित्य को और मध्यकालीन भारतीय लोगों का जीवन, उनका विचारधारा और संस्कार को समझने में काफ़ी बड़ी मदद दी।

इस तरह मैं भक्ति साहित्य का पहला गद्य माननेवाली "चौरासी वैष्णवन की वार्ता" के आधार पर अपना शोधकार्य लिखकर, अपनी पी.एच.डी की डिग्री प्राप्त की। अब डी. लिट की डिग्री के लिये एक और शोधकार्य लिखना था। सन् 2010 को मैंने पोस्ट डाकटरल कोर्स के लिये दाखिला लिया। मैंने सोचा कि मुझे अपने पी.एच.डी का विषय भक्ति साहित्य को आगे बढ़ाना है। पहले गद्य पर काम किया था, अब पद्य पर काम करके भक्ति साहित्य की नयी बातें सीखना उचित समझा। मैं फिर से भक्ति साहित्य में घुस गयी। मुझे फिर तीन महीने के लिये भारत, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय भेजा गया। मैं तीन महीने तक जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में सुबह से रात तक काम करने लगी। बहां मुझे साहित्य अकादमी की तरफ से सन् 2000 के बाद छपी "भारत के निर्माता" शीर्शक पर भक्तों के बारे में नयी नयी पुस्तकें मिलीं। मुझे इस बात से खुशी होती थी कि भक्ति में मुझे ऐसे नये नये नाम मिल रहे थे जिनको मैं पहली बार सुन रही थी। भक्ति साहित्य में कृष्णभक्ति और रामभक्ति के अलावा भक्ति साहित्य के दूसरे प्रतिनिधि भी हैं जिनका भक्ति भाव न कृष्णभक्ति है और न रामभक्ति।

हिंदी साहित्य के पाठ्यक्रम (syllabus) में जो मध्यकाल है, उसमें हम बी.ए. के विद्यार्थियों को भक्ति साहित्य को पढ़ाते हैं। जिसमें सगुण भक्ति में, सूरदास और तुलसीदास को और निर्गुण भक्ति में कबीर को पढ़ाते हैं। भक्ति साहित्य पर, मेरे इस दूसरे शोध कार्य में, मुझे ऐसे भक्त कवि पहचानने को मिले जो भक्ति के बिलकुल दूसरे, नये परिपथ को अपनाए थे। उन्हीं के कृतित्व से पता चला कि भक्ति में कृष्णभक्ति, रामभक्ति के अलावा भक्ति के और भी रास्ते हैं, भक्ति के और दूसरे भाव भी हैं कि जिनका इतिहास में अपना विशेष नाम हैं, जैसे – दादू पंथ, गुरुभक्ति, एकला चलो या निज आनंद, एकलवीर पंथ, ज्योति के साधक। अब इन सब भक्तों के भक्तिभाव पर दो शब्द बोलना ज़रूरी समझती हूँ।

दादू दयाल जी का भक्ति भाव, दादु पंथ के रूप में प्रचलित था। राजस्थान के रहनेवाले दादू दयाल जी एक संत थे जो अकबर बादशाह के साथ निरंतर संपर्क में रहते थे और उनके डेढ़ सौ से अधिक शिष्य थे। उनके भक्ति मार्ग को इतिहास में "दादू पंथी" (दादू का मार्ग) के नाम से जाना जाता है। उनकी भक्ति की गहराई, उनकी इन बातों से पहचानी जा सकती है: "मैं ब्रह्मांड का सेवक हूँ, और सृष्टिकर्ता मेरा परिवार है।" भगवान को अपना परिवार माननेवाला इंसान भक्तों का ताज हो सकता है। उनकी भक्ती की गहराई भी, ऊंचाई भी असीम है।

रज्जब जी का भक्तिभाव इतिहास में गुरुभक्ति के नाम से प्रसिद्ध है। भक्ति में जो रास्ता उन्होंने अपनाया इसका कारण उनके अपने गुरु दादू दयाल जी के प्रति असीम सम्मान था। रज्जब जी अपने गुरु को भगवान जैसा मानकर उनके बहुत बड़े भक्त बन गये थे। रज्जब जी जैसा अपने गुरु को आदर देनेवाला शिष्य संसार भर में मिलना असंभव है। यहां तक कि वे अपने गुरु को अपने कंधों पर बिठाकर चलना चाहते थे। हर जगह सदा उनके साथ रहते थे। उनकी सेवा करने के लिये उन्होंने शादी तक नहीं कीं। जब दादू दयाल जी इस संसार से चल बसे तब रज्जब जी उसी दिन से अपनी आँखें बन्द करके चलने लगे। जब उनसे इसका कारण पूछा गया कि आप क्यूं अपनी आँखें बन्द करके चलते हैं तो उन्होंने यह उत्तर दिया था "अब इस दुनिया में मेरे लिये देखने लायक कुछ नहीं रहा है।" इससे बढ़कर अपने गुरु को आदर देनेवाला इंसान कहां मिल सकता है? इसलिये रज्जब जी गुरुभक्ति के रास्ते में एकलौता भक्त हैं।

भक्ति का एक और विशेष रास्ता आंन्दधन जी का है। आंन्दधन जी ने भी भक्ति में एक ऐसा रास्ता अपनाया जिस में वे स्वयं एकलौता भक्त रह गये। इनके भक्तिभाव इतिहास में

"निज आंन्द" और "एकला चलो" के नाम से प्रसिद्ध है। इस तरह का भक्तिभाव दूसरे किसी भक्त में नहीं मिला। उनके भक्तिभाव के अनुसार सबका अपना - अपना रास्ता होता है और इसका फल भी सिर्फ उसी का होता है। कोई भी किसी के रास्ते से चल नहीं सकता। इस कारण उनके भक्ति भाव का आधार "निज आंन्द" और "एकला चलो" है। असल में उनका यह विचार बिलकुल सही है। भाव मनुष्य के मन में होता है जिसके बारे में सिर्फ वह खुद और ऊपरवाला जान सकता है और इसका परिणाम भी सिर्फ उसी को ही मिलता है। इस लिये उनका कोई शिष्य भी नहीं था। इस सत्य को लेकर चलेंगे तो आंन्दधन जी के भक्तिभाव को हर कोई मान सकता है। आंन्दधन जी का भक्तिभाव भी किसी दूसरे भक्त में मिल नहीं सकता। इसलिये उनका भक्ति मार्ग "एकलवीर पंथ" के नाम से भी प्रचलित है।

मलूकदास जी का भक्ति कबीर जी के भक्ति के समान है। उनका भक्तिभाव भी मनुष्य की सेवा करना, ग़रीबों को मदद

देना, इंसान को सब से ज्यादा आदर करने के विचारधारा पर आधारित है। उनका यह एक पद उनके भक्ति की आवाज़ है:

भुखहिं टूक, प्यासेहिं पानी।
ऐहि भगति हरि के मन माहीं।

इस पद का मतलब भूखे को रोटी, प्यासे को पानी देनेवाला ही भक्त हो सकता है। मलूकदास का भक्ति मार्ग, "दूसरों की आवश्यकताओं की पूर्ति" पर आधारित था, जो बचपन में ही प्रकट होने लगा था। मलूकदास जी का भक्ति चमत्कार गरीबों, भूखों और जरूरतमंदों से संबंधित मामलों में प्रकट हुए। बादशाह औरंगजेब ने भी मलूकदास जी को महल में रहने का प्रस्ताव रखा, पर मलूकदास जी ने यह कहते हुए मना कर दिया कि लोगों की सेवा करना उनका प्राथमिक कर्त्तव्य है।

रामलिंगम स्वामी जी भक्ति के इतिहास में "ज्योति के साधक" के नाम से जाने जाते हैं। रामलिंगम स्वामी जी ने मोमबत्ती की रोशनी में सत्य को देखा और मोमबत्ती की रोशनी में, उन्हें सृष्टिकर्ता का दर्शन हुआ था। बचपन से ही उन्हें पढ़ने का शौक नहीं था। पाठशाला में भी वे अपने सामने एक आईना रखते थे। आईने के सामने एक मोमबत्ती रखते और सामने बैठकर आईने में मोमबत्ती की रोशनी को देखते, उस रोशनी से बातें करते थे। बचपन से उनको पाठशाला के ज्ञान पर मन नहीं लगता था। उन्होंने बचपन में ही ऐसी पंक्तियां लिखी जिस में शिक्षा के प्रति उनकी नाराजगी स्पष्ट नज़र आता है:

हे भगवन! मुझे न भेजा नियमित पाठशाला में तुमने
प्रविष्ट कर लिया निज पाठशाला में करुणा से
दिया समस्य ज्ञान विशुद्ह रुप में

इन श्लोकों से पता चलता है कि रामलिंगम जी बचपन से ही ज्ञान मार्ग पर नहीं, भक्ति मार्ग पर चलना पसंद करते थे। बुढ़ापे में रामलिंगम जी महसूस करते थे कि उनके अंतिम दिन निकट है। जब वह दिन आता है तो ब्रह्ममुहूर्त में "ज्योति तत्व में लीन हो गये थे।" लीन होने से पहले उन्होंने वहां उपस्थित लोगों से कहा था कि वे भविष्य में एक ज्योति के रूप में, इस दुनिया में फिर लौटेंगे। यह बोलकर वे एक कमरे में चले गए और इसके बाद उनको किसी ने नहीं देखा। उन्होंने ज्योति को सत्य मानकर, उसकी पूजा में जीवन बिताया और उसी में ही लीन हो गये। इसलिये उनके भक्ति इतिहास में "ज्योति के साधक" के नाम से प्रचलित है।

भक्ति साहित्य में विशेष महत्व रखनेवाली बात यह भी थी कि इन भक्त कवियों में ऐसे भी थे जो मुगल बादशाहों के तीन या चार पीढ़ी न सिर्फ देखे बल्कि उनके साथ घनिष्ठ संबंध में रहे थे। उदाहरण के लिये आंन्दधन जी और मलूकदास जी बादशाह अकबर से लेकर औरंगज़ेब तक के चार पीढ़ी को तथा रज्जब जी जहांगीर से लेकर औरंगज़ेब तक के तीन बादशाहों का काल को देखा। मुगल बादशाहों के साथ सम्पर्क का एक उदाहरण बादशाह अकबर दादू जी को अपने दरबार में बुलाकर चालीस दिन तक धार्मिक और दार्शनिक विषयों पर वाद विवाद करना पसंद करते थे। अकबर ने ही अष्टछाप के कवि सूरदास और कृष्णदास जी के पास मिलने स्वयं उनके यहां पधारे थे। एक और उदाहरण यह है कि सूत्रों के अनुसार मलूकदास जी के बहुत गहरे भक्तिभाव के बारे में सुनकर, बादशाह औरंगज़ेब ने उनको दरबार में आमंत्रित किया था। उनके साथ धार्मिक, दार्शनिक विषयों पर बातचीत करके हिन्दु धर्म के नियमों के बारे में, अपनी जानकारी को मलुकदास जी द्वारा स्पष्ट कर लिया था। इस तरह के उदाहरण जैन भक्तों के बारे में भी नीचे दिया जाता है।

मेरे शोधकार्य में जैन भक्तों के बारे में भी जानकारियां दी गयीं। मुगल बादशाहों से अकबर, जहांगीर और शाहजहां का जैन भक्तों के साथ भी अच्छा संपर्क था। उन्होंने जैन भक्तों को दरबार में आमंत्रित करके, उनको दरबार के ऊंचे पदों में नियुक्त करते थे। उनको काम करने के लिये अच्छी सुविधाएं प्रदान करते थे। जिनमें हिरविजयसूरि, सिधिचंद्रसूरि, विजयसेंसूरि, भानुचंद्रसूरि, सत्यविजय, विजयदेवसुरि जी जैसे जैन भक्तों के नाम ले सकते हैं। अकबर बादशाह जैन भक्तों से जैन धर्म के बारे में तथा वैष्णव भक्तों से हिन्दु धर्म के बारे में अपनी जानकारी बढ़ाते रहते थे। बाबरी बादशाहों ने कई जैन भक्तों को तरह तरह के उपाधियों से सम्मानित भी करते थे। जैसे अकबर बादशाह ने हिरविजयसूरि जी को "जगद गुरु", विजयसेनसूरि जी को "सवाई हिरविजयसूरि", सिधिचंद्रसूरि को "खशफ़ हाम", जहांगीर बादशाह ने विजयदेवसुरि को "जहांगीरी महातापा" उपाधियों से सम्मानित किया था।

भक्ति के इन कवियों के अध्ययन के आधार पर मैंने अपने शोधकार्य में, भक्ति की साहित्यिक विरासत को पहली बार वैज्ञानिक रूप से दिशाओं के आधार पर वर्गीकृत किया। साथ ही पहली बार जैन भक्तों के बारे में जानकारी दी। भक्तों के भक्तिभाव के आधार पर, भक्ति के एकला चलो, निज आनंद, ज्योति की साधक, गुरुभक्ति जैसे नए रास्तों के बारे में नयी जानकारियां हमारे उज्बेक विद्वानों तथा उज्बेक पाठकों

तक पहुंचायी। जिनके फलस्वरुप मुझे डी.लिट की डिग्री तथा प्रोफेसर की उपाधि भी प्राप्त हुई।

भक्ति साहित्य मेरे लिये रहस्यों के संसार की एक यात्रा जैसा लगा। बचपन में हम सुनते थे कि भारत रहस्यों का, अजीब घटनाओं का और महान ऋषियों का देश है। भक्ति साहित्य का अध्ययन करके मुझे इस बात पर पूरी तरह विश्वास हुआ।

सहायक सूची:

1. गोकुलनाथ। चौरासी वैष्णवन की वार्ता। – मथुरा, 1999.
2. कुमारपाल देसाई। आनन्दधन। – दिल्ली, 2006.
3. किशनाराम विशनोई। दादूदयाल: सिधांत और कविता। – दिल्ली, 1996.
4. ज्योति के साधक रामलिंगम स्वामी "वल्ललर" व्यक्तित्व, कृतित्व एवं दर्शान। – दिल्ली, 1999.
5. पुरुषोत्तम अग्रवाल। आकथा कहानी प्रेम की। – दिल्ली, 2010.
6. प्रभूदयाल मित्तल. अष्टछाप परिचय। – मथुरा, 1949.
7. बलदेव वंशी। मलूकदास। – दिल्ली, 2006.
8. बलदेव वंशी। दादु ग्रनथावली। – दिल्ली, 2005.
9. रामबक्ष। दादू दयाल। – दिल्ली, 2011.
10. हरगुलाल। कृष्णदास। – दिल्ली, 2001.
11. शिवकुमार मिश्र। भक्ति आंदोलन और भक्ति साहित्य। – पटना, 2010.